بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-18.08.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع گورداسپور (پنجاب)

ओहदेदारों के कर्त्तव्य एवं दायित्व।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 18 अगस्त 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला क़ुर्आने करीम में फ़रमाता है कि निश्चित ही अल्लाह तआला आदेश देता है कि अमानत (धरोहर, दायित्व, सवा) को उसके योग्य व्यक्ति के हवाले करो। एक हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई ओहदा अथवा ऐसा पद जिसमें लोगों के मामले देखने का अधिकार दिया गया हो तो यह भी एक अमानत है। अतएव इस दृष्टि से हमारे जमाअती निज़ाम में भी हर एक पद या सेवा अमानत है।

जमाअती निज़ाम में हर एक स्तर पर ओहदेदारों का चयन किया जाता है अतः अल्लाह तआला का आदेश है कि जब भी तुम इस उद्देश्य के लिए चुनाव करो तो इस बात को सम्मुख रखो कि चयनित व्यक्ति अमानत का हक़ अदा करने वाले हों।

चुनाव करते समय रिश्तेदारी का ध्यान नहीं रखना चाहिए। कई बार कुछ ओहदेदार मर्कज़ के द्वारा अथवा ख़लीफ़-ए-वक़्त की ओर स भी नियुक्त कर दिए जाते हैं। कोशिश यही होती है कि सोच विचार करके जो सर्वोत्तम व्यक्ति उपलब्ध हो उसे नियुक्त किया जाए परन्तु कभी अनुमान लगाने में ग़लती भी हो सकती है अथवा ओहदे प्राप्त कर लेने के बाद लोगों के स्वभाव भी बदल जाते हैं और विनम्रता एवं परिश्रम से काम करने की आत्मा शेष नहीं रहती। अतएव हमें यह प्रयास करना चाहिए कि दुआ करके अपने में से बहतरीन लोगों को चुनें। साधारणतः यही कोशिश होती है कि जो व्यक्ति बढ़ बढ़ कर इस

लिए आगे आ रहा होता है कि उसे पद दिया जाए, उसके हवाले यह सेवा न की जाए। यदि ऐसे व्यक्ति का नाम चुनकर आ भी जाए तो भी मर्कज़ अथवा ख़लीफ़-ए-वक़्त यदि उसको स्थिति से अवगत हो तो उसकी स्वीकृति नहीं दी जाती। यह तरीक़ा ठीक आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्देशानुसार है। एक बार दो लोग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए तथा निवेदन किया कि अमुक सेवा हमारे हवाले की जाए, हम उसके योग्य हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसके हवाले मैं कोई सेवा करता हूँ अल्लाह तआला उसकी सहायता करता है तथा जो अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए स्वयं कोई काम अपने ज़िम्मे ले तो अल्लाह तआला की ओर से उसकी सहायता नहीं होती, उसके काम में बरकत नहीं पड़ती। अतः कभी भी ओहदे की अभिलाषा नहीं होनी चाहिए, हाँ! दीन की सेवा करने की भावना होनी चाहिए, वह किसी भी रंग में हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस साल कुछ देशों में ज़ैली तंज़ीमों (निम्न संगठनों) के चुनाव होने हैं। उन सगठनों के सदस्यों में से जो भी चुनाव कमैटी के सदस्य बनें, उन्हें चाहिए कि अल्लाह तआला के आदेशानुसार दुआ और न्याय के साथ अपने सुझाव देने के अधिकार को उपयोग में लाएँ।

इसके साथ साथ मैं ओहदेदारों को भी उनके दायित्व याद दिलाना चाहता हूँ। ओहदेदारों को सदैव याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हमें सेवा का अवसर दिया है। अतः हर प्रकार के स्वार्थ से ऊपर उठ कर सेवा में कार्यरत् हों। कुछ आहदेदारों के व्यवहार में विनयता न होने की शिकायतें आती हैं। यहाँ तक कुछ ओहदेदारों के सम्बंध में रिपोर्ट मिलती है कि सलाम तक का जवाब नहीं देते। ऐसा व्यवहार दिखाने वाले अपना सुधार करें तथा हर एक बच्चे बड़े से प्यार एवं विनयता के साथ मिलें। आपको जमाअत के लोगों की सेवा के लिए नियुक्त किया गया है, न कि अफ़सर शाही का रौब डालने के लिए, अपने अन्दर विनम्रता पैदा करें, जो भी दायित्व आपके हवाले किया गया है उसका हक़ अदा करने का प्रयास करें। अपनी समस्त प्रतिभाएँ इस सेवा को सुन्दर रंग में अदा करने के लिए लगानी हैं, यह सोच होगी तो तभी सही काम करने की आत्मा भी पैदा होगी तथा जमाअत के लोगों का भी सहयोग रहेगा। प्रायः ओहदेदार जो शिकायत करते हैं कि कुछ विभागों में जमाअत के लोग सहयोग नहीं करते, निःसन्देह यह लोगों का भी कर्त्तव्य है कि जिन लोगों को उन्होंने स्वयं सेवा के लिए चुना है उनके साथ सहयोग भी करें परन्तु साथ ही ओहदेदारों का भी काम है कि अपने सुन्दर नमूने लोगों के सामने क़ायम करें।

इसी तरह अधिक इस्तिग़फ़ार, अल्लाह तआला की तस्बीह तथा अपनी अवस्थाओं का निरीक्षण करने की आवश्यकता है। यदि एक सैकरेट्री तर्बियत पाँच समय की नमाज़ अदा नहीं करता तो वह दूसरों को नमाज़ की अदायगी का कैसे कह सकता है? इसी प्रकार यदि कोई ओहदेदार उचित दर के अनुसार चन्दा अदा नहीं करता तो वह दूसरों को धन के बलिदान की ओर कैसे ध्यान दिलाएगा? यदि तर्बियत के सैकरेट्री अपने उच्चतम नमूनों के साथ प्यार और मुहब्बत से जमाअत के लोगों की तर्बियत करें तो वे एक क्रान्तिकारी बदलाव पैदा कर सकते हैं।

हर एक ओहदेदार को अपने विभाग को सुन्दर बनाने के लिए कम से कम दो रकअत नफ़्ल नमाज़ प्रतिदिन पढ़ने चाहिएँ। यदि तर्बियत का विभाग सक्रिय हो जाए तो अन्य विभाग स्वयं ही सत्तर प्रतिशत काम करने लगेंगे।

ज़ली तंज़ीमों को भी हर स्तर पर अपने आपको सक्रिय करना होगा। ओहदेदार स्टेज पर बैठने के लिए नहीं हैं, हर ओहदेदार को कार्यकर्ता बन कर अपने दायित्व का निर्वाह करना चाहिए। याद रखें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि क़ौम का सरदार क़ौम का सेवक है। ओहदेदारों का यह भी काम है कि जमाअत के लोगों से व्यक्तिगत सम्बंध स्थापित करें, उनकी ख़ुशियों एवं दुःख दर्द में शामिल हों। लोगों में यह भावना पैदा करें कि जमाअत का निज़ाम एक दूसरे की सहानुभूति तथा ध्यान रखने के लिए बनाया गया है यही सोच हमें अल्लाह तआला के निकट करने वाली है। अल्लाह करे कि अहमदिया ख़िलाफ़त को सदैव ऐसे सुलताने नसीर प्रदान हों जो अपने दायित्वों को समझते हुए अपने कामों को पूरा करें।

ओहदेदारों को याद रखना चाहिए कि आमला के इजलासों तथा मीटिंगज़ में शामिल होकर अपने सझाव को प्रकट कर देना तथा यह समझ लेना कि हमने अपने कर्त्तव्य को पूरा कर दिया, यह काफ़ी नहीं। लोगों की भलाई के लिए योजनाएँ बनाना तथा फिर उनके अनुसार काम करवाना अत्यंत आवश्यक कार्य है। उपलब्ध संसाधनों के अन्दर रहते हुए सुन्दर विवेक के साथ लोगों की आवश्यकताओं का ध्यान रखें।

आजकल रिशते नाते का विभाग एक बड़ी चुनौती लिए हुए है इसके लिए विस्तृत योजनाबद्ध रूप में काम करने की आवश्यकता है। जमाअती निज़ाम तथा ज़ैली तंज़ीमों को मिलकर इसके लिए काम करना होगा इस विषय में भी तर्बियत विभाग को सक्रिय करने की आवश्यकता है। यदि हमारे युवाओं की उचित तर्बियत हो तो हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस निर्देश को सदैव सामने रखने वाले होंगे कि रिश्ते के मामले में धन, वंश तथा सुन्दरता के बजाए दीन को प्राथ्मिकता देनी चाहिए।

उमूरे आम्मा का विभाग भी अत्यंत महत्त्व पूर्ण है। साधारणतः समझा जाता है कि इस विभाग का काम लोगों को दंड दिलवाना अथवा कठोरता क साथ लोगों को चेतावनी देना है। इस विभाग में काम करने वालों को पता होना चाहिए कि उनका केवल यह काम नहीं, यह काम का केवल एक भाग है। कठोरता के साथ सावधान करना तो कदाचित उनका काम नहों, यह तो कवल वहाँ अनिवाय होता है जहाँ अत्यंत आवश्यकता हो और तब ही उसकी सिफ़ारिश की जाती है। यदि तर्बियत विभाग सक्रिय हो तो जमाअत के लोगों में आपस के झगड़ों से सम्बंधित उमूरे आम्मा की अनेक समस्याओं का निवारण स्वयं ही हो जाएगा। उमूरे आम्मा का काम लोगों को दंड दिलाना नहीं अपितु दंड से बचाना है तथा इसके लिए उन्हें यथासम्भव प्रयत्न करना चाहिए।

कई बार ओहदेदारों के व्यवहार जमाअत के लोगों में जमाअती व्यवस्था के विरुद्ध कुधारणा पैदा कर देते हैं। जमाअत के लोगों को मैं यह बता दूँ कि हर एक पत्र जो यहाँ ख़लीफ़ः वक़्त के दफ़्तर में पहुंचे, उसे खोला भी जाता है, पढ़ा भी जाता है तथा उस पर काररवाई भी की जाती है, यदि कहीं विलम्ब होता है तो वह सम्बंधित जमाअत में होता है तथा इस प्रकार जमाअत के लोगों तथा ख़लीफ़-ए-वक़्त में दूरियाँ पैदा करने का ये ओहदेदार कारण बनते हैं।

जिन ओहदेदारों क हवाले निर्धन लोगों की सहायता के अनुदान का काम है उन्हें विशेष रूप से याद रखना चाहिए कि अपने कर्त्तव्य के निर्वाह में कदाचित विलम्ब एवं सुस्ती न करें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो इमाम अर्थात ओहदेदार, निर्धन एवं दीन लोगों के लिए अपने द्वार बन्द करता है, ख़ुदा उसकी आवश्यकताओं के लिए आसमान पर द्वार बन्द कर देता है। अतः यदि ऐसी सोच रखने वाला कोई ओहदेदार अथवा उनके दफ़्तर में कोई ऐसा कारकुन है तो उसे अल्लाह तआला का भय रखते हुए लागों की आवश्यकताएँ पूरी करने मे जल्दी करनी चाहिए। निवेदन पत्र लेकर दराज़ में रख देना और लम्बे समय तक काररवाई ही न करना, यह बहुत बड़ा अपराध है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जहाँ कहीं भी तुम हो, अल्लाह का तक़्वा धारण करो, लोगों से सुन्दर शिष्टाचार के साथ व्यवहार करो।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू मूसा और मआज़ बिन जबल को यमन के दो अलग अलग क्षेत्रों की ओर पदाधिकारो नियुक्त करके भेजा तो उन्हें यह नसीहत फ़रमाई कि आसानी पैदा करना, प्रेम एवं प्रसन्नता फैलाना तथा घृणा को न पनपने दना। यह नसीहत हर ओहदेदार को मार्ग दर्शक नियम के रूप में सदैव अपने सम्मुख रखना चाहिए।

अतः हर एक ओहदेदार को यह बात याद रखनी चाहिए कि हमने अपने भीतर रूहानी सुन्दरता पैदा करनी है। अल्लाह तआला हम सबको इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ
سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا
شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ
ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ
وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131